

---

### एक संप्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद या संक्रियावाद (Functionalism as a System)

---

एक संप्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद शिकागो विश्वविद्यालय में उस समय अपनी लोकप्रियता के शिखर पर रहा जब कार्ल मनोविज्ञान के अध्यक्ष थे। संप्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद के योगदानों को कार्ल के विचारधाराओं को आधार मानते हैं जिसका वर्णन उनकी

---

पुस्तक 'साइकोलॉजी; ए स्टडी ऑफ मेन्टल एक्टिविटी' (Psychology : A Study of Mental Acitivity) में पर्याप्त है, निम्नांकित सात भागों में बाँटकर प्रस्तुत किया जा सकता है—

**1 मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय-वस्तु (Definition and Subject Matter of Psychology) :** कार्ल के अनुसार मनोविज्ञान मानसिक क्रिया या अनुकूली व्यवहार (adaptative behaviour) का अध्ययन करता है। अतः मनोविज्ञान में अनुकूली व्यवहार (adaptative behaviour) एक मुख्य संप्रत्यय है। इसमें प्रत्यक्षण, स्मृति, भाव, निर्णय एवं इच्छा आदि प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। इन प्रक्रियाओं से व्यक्ति को वातावरण में समायोजन करने में मदद मिलती है। इस तरह से मनोविज्ञान का संबंध तत्त्वों या अंतर्वस्तु (content) से न होकर प्रक्रियाओं (processes) से होता है। कार्ल ने चेतन को बुद्धि के समान एक अमूर्त संप्रत्यय (abstract concept) माना है। एक अमूर्त संप्रत्यय (abstract concept) के रूप में, यह प्राणी को पर्यावरण के साथ समायोजन करने में कुछ मदद नहीं करता है। यह अनुकूली व्यवहार पर कोई बल नहीं डालता है। इस ख्याल से यह स्पष्ट हो जात है कि कार्ल प्रकार्यवादी मनोविज्ञान को व्यवहारवाद के नजदीक ला सकने में समर्थ हुए।

कार्ल का मत था कि अनुकूली व्यवहार (adaptive behaviour) के तीन गुण होते हैं जो निम्नांकित हैं—(i) इस तरह के व्यवहार में एक अभिप्रेरण उद्दीपन (motivating stimulus) होता है। (ii) इस तरह के व्यवहार में एक संवेदी उद्दीपन (sensory stimulus) होता है (iii) इस तरह की अनुक्रिया परिस्थिति को इस ढंग से परिवर्तित कर देती है कि उससे अभिप्रेरण उद्दीपन की तुष्टि (satisfaction) हो जाती है। यदि कोई भूखा व्यक्ति होटल में जाकर पेट भर भोजन करता है, तो उसका यह व्यवहार अनुकूली व्यवहार (adaptive behaviour) का उदाहरण है। इस उदाहरण में भूख एक अभिप्रेरण उद्दीपन (motivating stimulus) है, भोजन एक संवेदी उद्दीपन (sensory stimulus) है तथा भोजन करना एक अनुकूली व्यवहार (adaptive behaviour) का उदाहरण है। उद्दीपन के रूप में अभिप्रेरण (motive) व्यक्ति के व्यवहार को तब तक प्रभावित करता जाता है जबतक कि प्राणी के लिए वह उद्दीपन अधिक प्रभावी (effective) नहीं रह जाता है। इस तरह से अभिप्रेरण हमारी क्रियाओं को उत्पन्न करता है तथा निर्देशित (direct) करता है। कार्ल ने तीन प्रविधियों का वर्णन किया है जिसके सहारे अनुकूली क्रिया (adaptive act) द्वारा अभिप्रेरण उद्दीपन (motivating stimulus) समाप्त हो जाते हैं— (i) पहला तरीका तो वह है जिसमें अनुकूली व्यवहार अभिप्रेरण को सीधे हटा सकने में समर्थ हो जाता है। जैसे—भोजन करने से भूख समाप्त हो जाती है, (ii) दूसरा, अनुकूली व्यवहार के होने से अभिप्रेरण (motive) अपने-आप अस्त-व्यस्त हो जाता है क्योंकि इससे और भी अधिक अभिप्रेरण उद्दीपन उत्पन्न हो जाते हैं। जैसे—एक व्यक्ति जो कड़ी धूप में लकड़ी काटता है संभव है कि थककर वह लकड़ी

काटना ही छोड़ दे, (iii) अनुकूली व्यवहार के कुछ ऐसे... (sensory consequence) होते हैं जिनसे अभिप्रेरण अपने आप समाप्त हो जाती है। जैसे—किसी व्यक्ति का हाथ जब गर्म बर्तन से स्पर्श हो जाता है, तो वह उसे हाथ से छोड़ देता है क्योंकि उसके अंगुलियों में जलन होने लगते हैं। उच्चतर प्राणियों (higher organisms) में जैसे—मनुष्य में कार्र ने अनुकूली व्यवहार (adaptive behaviour) को दो मुख्य भागों में बाँटा है : पहला भाग वह है जिसमें व्यक्ति भनात्मक समायोजन (positive adjustment) करता है जिसमें वांछित पेशीय व्यवहार (desire motor behaviours) तथा उपयुक्त संवेदी समायोजन (appropriate sensory adjustments) होते हैं। दूसरे भाग में, लक्ष्य पर पहुँचने के बाद उपभोग करने का व्यवहार (consummation behaviour) होता है। अनुकूली व्यवहार हैं। कार्र ने अनुकूली व्यवहार के दो तरह के परिणामों की चर्चा किए हैं। अनुकूली व्यवहार का एक स्वाभाविक परिणाम तुष्टि है क्योंकि इससे अभिप्रेरित उद्दीपन का समाधान होता है तथा सहायक प्रभाव ऐसे व्यवहार का दूसरा प्रमुख प्रभाव है। जैसे—भोजन करने से न केवल भूख की कमी होती है (पहले तरह का परिणाम)। बल्कि शरीर को इससे संपोषण (nourishment) भी होता है (दूसरे तरह का प्रभाव) कार्र ने इस बात पर बल दिया कि अनुकूली व्यवहार की व्याख्या इस सहायक परिणाम (auxiliary consequence) के रूप में नहीं बल्कि स्वयं अभिप्रेरण (motivation) के रूप में की जानी चाहिए। हमलोग भोजन मूलतः इसलिए करते हैं कि हमें भूख लगी रहती है न कि इस ख्याल से करते हैं कि हमें शरीर को संपोषित करना है।

## 2 प्रकार्यवाद की अभिधारणाएँ (Postulates of Functionalism):

यद्यपि प्रकार्यवाद का कोई निश्चित अभिगृहीत नहीं था, मनोवैज्ञानिक क्रियाओं (psychological activities) के बारे में प्रकार्यवादियों ने कुछ पूर्वकल्पनाएँ कर रखी हैं। मार्क्स तथा क्रोनान-हिल्लिक्स (Marx & Cronan-Hillix, 1987) के अनुसार ऐसी पूर्वकल्पनाएँ (assumptions) या अभिगृहीत (postulates) निम्नांकित हैं— (i) सभी क्रियाओं की उत्पत्ति किसी-न-किस संवेदी उद्दीपन (sensory stimulus) से होता है। इन संवेदी उद्दीपनों की अनुपस्थिति में कोई अनुक्रिया नहीं हो सकती है, (ii) सभी संवेदी उद्दीपन से सिर्फ अभिप्रेरण ही नहीं बल्कि व्यवहार भी प्रभावित होते हैं, (iii) प्रत्येक व्यवहार आन्तरिक रूप से अनुकूली एवं उद्देश्यपूर्ण होता है, (iv) व्यवहार एक सतत एवं समन्वित प्रक्रिया होती है और इससे उद्दीपन परिस्थिति में परिवर्तन होता है।

3 कार्य-प्रणाली विधि (Methodology) : कार्र ने मानसिक क्रियाओं के अध्ययन के लिए कई विधियों का प्रतिपादन किया है। वे संरचनावादियों के अन्तर्निरीक्षण विधि को स्वीकार किया, परन्तु इसके साथ-ही-साथ सामान्य प्रेक्षण (common observation) की भी एक प्रमुख विधि है परन्तु साथ-साथ उन्होंने यह आशंका भी व्यक्त किया कि मनुष्यों के साथ प्रयोग में यह विधि अधिक वैध नहीं हो सकता है क्योंकि मनुष्यों की क्रियाओं पर पूर्ण नियंत्रण जो इस विधि की सफलता के लिए आवश्यक

है, संभव नहीं है। इस तरह से प्रकार्यवादियों द्वारा तीन विधियों को स्वीकृत किया गया है—अन्तर्निरीक्षण, सामान्य प्रेक्षण (common observation) तथा प्रयोग।

**4 मनोदैहिक समस्या (Psychosomatic Problem) :** कार्ल ने मन-शरीर समस्या की एक काफी सरल व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होंने मानसिक क्रिया (mental activity) को मनोदैहिक (psychophysical) माना है। मानसिक क्रिया को इस अर्थ में मनोवैज्ञानिक या मानसिक (psychical) माना जाता है क्योंकि व्यक्ति को इस क्रिया को करने का पूरा आभास के अभाव में वह उस वस्तु का प्रत्यक्षण, चिन्तन आदि नहीं कर सकता है। मानसिक क्रिया इस अर्थ में दैहिक (physical) होता है कि यह दैहिक प्राणी (physical organism) की एक प्रतिक्रिया होती है। उन्होंने क्रिया के मानसिक पहलू तथा दैहिक पहलू के बीच के संबंध की व्याख्या करने को कोई विशेष प्रयास नहीं किया है। अतः प्रकार्यवाद में संरचनावाद (structuralism) के समान मानसिक क्रिया का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता है। एंजिल (Angell) ने अपने प्रसिद्ध शोध-पत्र 'दी प्रोविन्स ऑफ फंक्शनल साइकोलॉजी' (The province of functional psychology) में यह स्पष्ट किया था कि मन तथा शरीर को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है तथा ये दोनों एक ही समष्टि (whole) में सन्निहित होते हैं। इसके बावजूद भी इन दोनों में अन्तःक्रियाएँ (interaction) होती हैं। कोई भी अनुकली क्रिया (adaptive act) या मानसिक क्रिया में मानसिक (psychical) तथा दैहिक (physical) दोनों ही तरह के घटनाचक्र की समग्रता (totality) होती है। इस तरह से प्रारम्भिक प्रकार्यवादियों जैसे एंजिल ने विलियम जेम्स के समान अन्तःक्रियावदी स्थिति के मजबूत किये। बाद के प्रकार्यवादी जैसे कार्ल ने मनोदैहिकी प्रक्रिया के बारे में बातचीत करते हुए द्वैतवाद (dualism) को सम्मिलित किया हालांकि कार्ल के लिए मन-शरीर समस्या का उत्तम समाधान द्वि-पहलूवाद (double-aspectism) ही था। निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि प्रकार्यवादी इस अर्थ में द्वैतवादी थे कि वे अनुभूति के मानसिक एवं दैहिक दोनों पहलुओं की पहचान कर रखे थे परन्तु वे संरचनावादियों के समान इन दोनों को एक-दूसरे से अलग करने के अर्थ में द्वैतवादी (dualistic) नहीं थे।

**5 वस्तुनिष्ठ आँकड़े पर बल (Emphasis on Objective Data) :** प्रकार्यवाद में पर्यावरण का वातावरण के साथ प्राणियों के होने वाले अनुकूलन (adaptation) या समायोजन (adjustment) पर अधिक बल डाला जाता है। समायोजन पर बल डालकर प्रकार्यवाद ने वस्तुनिष्ठ आँकड़ों (objective data) पर अधिक बल डाला है तथा अन्तर्निरीक्षण (introspection) को स्वीकार करके इसने आत्मनिष्ठ आँकड़ों (subjective data) पर भी बल डाला है। लेकिन समय बीतने के साथ-ही-साथ प्रकार्यवाद का झुकाव वस्तुनिष्ठ आँकड़ों की ओर बढ़ता गया।

प्रकार्यवाद में वस्तुनिष्ठ आँकड़ों के उपयोग के समर्थन के पर्याप्त सबूत मौजूद हैं। कार्ल ने प्रत्यक्षण (perception), संवेग तथा चिन्तन (thinking) को वस्तुनिष्ठ ढंग से

परिभाषित किया। उन्होंने प्रत्यक्षण को परिभाषित करते हुए कहा कि यह समायोजन की क्रिया के सम्बन्ध में उपस्थित एक विशेष संज्ञान होता है। उन्होंने प्रत्यक्षण को एक अनुकूली क्रिया (adaptive act) कहा है। उन्होंने प्रत्यक्षण को एक चयनात्मक प्रक्रिया (selective process) भी कहा है क्योंकि प्रत्यक्षण में व्यक्ति अनेक संवेदी उद्दीपनों में से कुछ खास-खास तरह के उद्दीपनों के प्रति ही अनुक्रिया करता है। उनके लिए प्रत्यक्षण संवेदन (sensation) से भिन्न होता है क्योंकि इससे संवेदी अनुभूतियों को एक विशेष अर्थ प्रदान किया जाता है। इन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि प्रत्यक्षण गत अनुभूतियों (past experiences) के अलावा अन्य चरों (variables) से भी प्रभावित होता है। ऐसे चरों में प्रत्यक्षणकर्ता (perceiver) की आवश्यकता, मनोवृत्ति, उद्देश्य आदि प्रमुख हैं। कार्ल ने संवेग का भी अध्ययन किया और इसे एक आंगिक समायोजन (organic adjustment) कहा है। संवेग की उत्पत्ति वहाँ होती है जहाँ समायोजन होने की संभावना धूमिल हो जाती है। संवेग में बाह्य परिस्थिति के साथ निबटने के लिए व्यक्ति को जो अतिरिक्त शक्ति (extra energy) मिलती है उसका आधार आन्तरिक क्रिया (internal activities) जैसे बढ़ा हुआ हृदयगति, रक्तचाप तथा श्वसन गति में वृद्धि आदि है। कार्ल ने चिन्तन से तात्पर्य वैसे वस्तुओं या घटनाओं के प्रति आशंकाओं से लगाया है जिनका पर्यावरण में तात्कालिक उपस्थिति नहीं होता है। उनका मत था कि प्रत्यक्षण द्वारा गत उद्दीपनों के लिए विचार या चिन्तन का तेजी से प्रतिस्थापन होता है। ऐसे विचारों या चिन्तन से वैसी अनुक्रियाएँ होती हैं जिनका अनुकूली महत्त्व (adaptive significance) होता है। जैसे, घर में आग लगने की चिन्तन व्यक्ति को दूसरे सुरक्षित स्थान में जाने के लिए बाध्य कर सकता है। कार्ल ने यह भी स्पष्ट किया है कि ऐसे चिन्तन सर्जनात्मकता (creativity) का उत्तर आधार होता है क्योंकि इससे सर्जनात्मक अनुकूली व्यवहार (adaptive adaptive behaviour) उत्पन्न होते हैं। करीब-करीब वैसी ही व्याख्या तक करने (reasoning) के लिए दिया है। चिन्तन के समान, तर्कण के भी समायोजी महत्त्व (adaptive significance) होते हैं। प्रत्यक्षण, चिन्तन एवं संवेग में अन्तर्निरीक्षणात्मक आँकड़ों को महत्त्वहीन समझा गया।

**6 संबंध के नियम (Principles of Connection) :** प्रकार्यवादियों के लिए संबंध के नियमों का तात्पर्य सीखने के नियमों से था। शायद यही कारण है कि प्रकार्यवादियों के शोध कार्यक्रम का यह केन्द्र बिन्दु था। इस सिलसिले में कार्ल ने साहचर्य ने नियमों (principles of association) को महत्त्वपूर्ण बतलाया जिसे वे साहचर्यवादी परम्परा से ग्रहण किये थे। उन्होंने साहचर्य के वर्णनात्मक नियमों (descriptive law) तथा व्याख्यात्मक नियमों (explanations law) के बीच अन्तर किया। उनके अनुसार समानता के नियम (law of similarity) को पहली श्रेणी में तथा सामीप्यता के नियम (law of contiguity) को दूसरी श्रेणी में रखा जा सकता है। उन्होंने व्याख्यात्मक नियम (explanatory laws) को पुनः दो भागों में बाँटा है—साहचर्य की उत्पत्ति या कार्य (origin or functions of association) तथा साहचर्य के मौलिक शक्ति (funda-

mental strength of association) सामीप्यता को पहले श्रेणी में रखा जा सकता है क्योंकि यह नियम साहचर्य की उत्पत्ति पर रोशनी डालता है। प्रकार्यत्मक शक्ति (functional strength) द्वारा इस तथ्य की व्याख्या होती है क्योंकि कुछ साहचर्य दूसरे साहचर्य से श्रेष्ठ होते हैं। बारंबारता के नियम (law of frequency) को भी इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। किसी साहचर्य को अधिक बार दोहराने से उसका साहचर्यत्मक शक्ति (associative strength) में वृद्धि हो जाती है।

हिलगार्ड एवं बॉअर (Hilgard & Bower, 1975) ने सीखने के बिन्दु पर प्रकार्यवादियों की स्थिति को उत्तम ढंग से संक्षेपीकृत किया है। उनके अनुसार सीखने की प्रक्रिया में निहित मुख्य प्रकार्यवादी नियम (functionalistic principles) निम्नांकित हैं—(i) सीखने वाले व्यक्ति की क्षमता में वैयक्तिक अन्तर (individual difference) होता है, (ii) विभिन्न मात्रा में अभ्यास (practice) देने से शिक्षण वक्र (learning curves) के आकार अलग-अलग हो जाते हैं, (iii) सीखने के लिए अभिप्रेरण आवश्यक है, (iv) अर्थ की मात्रा (degree of meaning) एक ऐसा आयाम है जिस पर सामग्रियों को अर्थपूर्णता से अर्थहीनता की दिशा में मापा जा सकता है।

7 व्यवहार की चयन की प्रक्रिया (Principles of Selection of Behaviour) : प्रकार्यवाद में कार्र द्वारा व्यवहार चयन (behaviour selection) के प्रक्रमों (mechanisms) पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। वे ध्यान, अभिप्रेरण तथा सीखना को व्यवहार चयन के तीन प्रमुख एजेन्ट बतलाए हैं। उन्होंने ध्यान' को संवेदी-पेशीय समायोजन (sensory-motor adjustment) की संज्ञा दिया है। उनका मत था कि ध्यान से प्रत्यक्षण में तीक्ष्णता आती है। अभिप्रेरण को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा कि यह एक सापेक्ष सतत उद्दीपन (relatively constant stimulus) को किसी निश्चित दिशा में व्यवहार के लिए निर्देशित करता है। कार्र ने सीखने को व्यवहार चयन की प्रमुख एजेन्ट माना है और यह निम्नांकित तीन तरीकों से संचालित होता है—(i) अनुभूति द्वारा कुछ अनुकूली प्रक्रम या साहचर्य को व्यक्ति सीखता है, (ii) जैसे-जैसे साहचर्य या अनुकूली प्रक्रमों को व्यक्ति सीखता है, उत्तेजन परिस्थिति के साथ पहले वे अनुक्रिया के साथ संबंधित हो जाते हैं तथा भविष्य में वह वही अनुक्रिया उत्पन्न कर सकने की क्षमता विकसित कर लेते हैं, (iii) कुछ अनुकूली प्रक्रमों या साहचर्यों को सीख लिये जाते हैं क्योंकि वे समाज द्वारा लागू किये जाते हैं। जैसे—व्यक्ति किसी विशेष प्रजाति (race) या जाति (caste) के प्रति स्नेह दिखलाना सीख लेता है।

स्पष्ट हुआ कि कार्र ने प्रकार्यवाद के मुख्य तत्त्वों को काफी स्पष्ट ढंग से उपस्थित किया है। सच्चाई यह है कि उनके ही कार्याविधि में प्रकार्यवाद की लोकप्रियता अपनी पराकाष्ठा पर रही और यह पहला अमेरिकन स्कूल था जिसने मनोविज्ञान के प्रयुक्त पहलू (applied aspect) पर बल डालकर मनोविज्ञान को आम लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध किया।